वाक़ियाते फ़ैज़ शाह

लेखक:
ख़लील वारिस वारसी

वाक़ियाते फ़ैज़ूशाह (रह०)

⁂

लेखकः
ख़लील वारिस वारसी
मुअल्लिम-ए-उर्दू, अलीगढ़

⁂

निवासी :
मुहल्ला सुल्हाड़ा, बिलग्राम, ज़िला-हरदोई (उ०प्र०)
दूरभाष : 08551-241217, 241281, 241543
मोबाइल : 9415595140

प्रकाशित वर्ष : 31 जनवरी, 2007

पुस्तकों की संख्या : 1000 (एक हज़ार)

पुस्तक का नाम : वाक़ियाते फ़ैज़ूशाह

क्रम बद्ध : मो० अमीन शाह वारसी, ख़ादिम ए ख़ास

निरीक्षक : मो० यासीन, फैय्याज़ वारसी *(एडवोकेट)*

सलाह : शकील शाह वारसी, मो० वारिस वारसी

लेखक : ख़लील वारिस वारसी

प्रकाशन का नाम : इम्तियाज़ अहमद वारसी
129-के/2-ए, पुरानी चकिया, इलाहाबाद

प्रिन्टर्स : शोवेज़ प्रिन्टर्स, 126, चक, इलाहाबाद
फोन : 2401124

हदिया : पच्चीस रुपये

सहायक : मो० हयात वारिस , अब्दुल मुईद अन्सारी *अध्यापक)*

तथा

मो० सलीम अन्सारी, बिलग्राम-हरदोई

शबीह पाक

(1) हज़रत हाजी हाफ़िज़ सैय्यद वारिस अली शाह (आज़अल्ला जि0) देवा शरीफ़
(2) हज़रत हाजी फ़ैज़ू शाह वारिस ख़ादिम ख़ास वारिसे पाक

हुवलवारिसउलकरीम-बिसमिल्लाहहिर्रहमानिर्रहीम

वाक़ियाते फ़ैज़ूशाह (रह.)

ख़ादिम-ए-ख़ास सरकार आलम पनाह
देवा शरीफ़, ज़िला-बाराबंकी

लेखक :

अलहक़ीर **ख़लील वारिस वारसी** (जाम वारसी)
मुअल्लिम-ए-उर्दू अलीगढ़ मुँशी, इलाहाबाद

स्थाई पता : **देवा शरीफ़, ज़िला-बाराबंकी (उ०प्र०)**
दूरभाष : 05248-245203
मोबाइल : 9838792101

शाह फ़ैजू की निराली शान है।
जिसको देखो आप पर कुरबान है।
(इसरार वारसी)

सरकार आलम पनाह के ख़ादिमे ख़ास हज़रत हाजी फैज़ शाह वारसी (रह०) और आस्ताना आलिया वारिस पाक के ख़ादिम-ए-ख़ास हज़रत शाहिद अली शाह वारसी के बारे में सम्पूर्ण जानकारी हेतु अवश्य पढ़िये।

वाक़ियाते फ़ैजू शाह

(रह.)

-: मिलने का पता :-

(1) **मो० अमीन शाह वारसी, शकील शाह वारसी**
ख़ानक़ाह हज़रत शाहिद अली शाह वारसी
देवा शरीफ़, जिला-बाराबंकी
फोन : 05248-245203

(2) **मो० यासीन वारसी**
आस्ताना हज़रत फ़ैजू शाह वारसी, ग्राम-बनेहरा, बीरबल (कुटी)
डाकघर-बेहमा, जिला-सीतापुर (उ.प्र.)
फोन : 05864-241260

(3) **फैय्याज़ वारसी** (एडवोकेट)
मुहल्ला सुल्हाड़ा, डाकघर-बिलग्राम
जिला-हरदोई (उ.प्र.)
फोन : 05851-241181, 241217, 241543
मोबाइल : 9415776116, 9415595140

मेरी अपनी राय व सल्लाह

मुकर्रमी सलाम मसनून,

जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है तो मैं कई बार देवा शरीफ़ गया हूँ दयारे वारिस में हाज़िरी के बाद मैं हज़रत शाहिद अली शाह वारसी (रह०) के पास घन्टों बैठकर देखा करता था और जायज़ा लिया करता था कि जैसा मैंने सुन रखा था कि हज़रत शाहिद अली शाह वारसी का किरदार बे-पनाह बेहतर है।

मैंने वैसा ही पाया जहाँ तक मेरी समझ का ताल्लुक़ है मैंने मारफ़त की किताबों में मुकम्मल जो फ़क़ीरी के गुण (अवसाफ़) पढ़े थे वो सारे गुण (अवसाफ़) हज़रत शाहिद अली शाह वारसी (रह०) में मैंने पाये सत्य तो यह है कि लेखक श्री ख़लील वारसी ने हज़रते शाहिद अली शाह के बारें में जो भी उनकी विशेषताएँ लिखी हैं मैं इनके हर-हर वाक्य से सन्तुष्ट हूँ और यह किताब वाक़ियाते फ़ैजू शाह हिन्दू व इस्लाम धर्म के मानने वालों के लिए सच्चे और सीधे मार्ग दर्शन का एक सबसे अच्छा साधन है।

इस पुस्तक को पढ़कर वारसी मसलक के अतिरिक्त भी हर मनुष्य आपसी भेद-भाव, ऊँच-नीच को भुलाकर सच्चे गुरु को प्राप्त कर भाव सागर को पार करके बैकुण्ठ का मार्ग पाकर स्वंय को अमर कर सकता है।

आपका—

मो० सलीम अन्सारी

बी.ए.,बी.एस.सी.

बिलग्राम-हरदोई

ख़ुशख़बरी

मुकर्रमी हज़रात,

नाचीज़ का सलाम कुबूल फरमायें,

हज़रत वारिस अली शाह रह० (आलम पनाह) से अक़ीदत व मुहब्बत रखने वालों के लिए ये खुशी की बात है कि जनाब मास्टर खलील वारिसी साहब जो उर्दू के मुअल्लिम हैं ख़ानदाने हज़रत फैंजू शाह वारसी के चश्मो चिराग़ हैं, ने शाहिद अली शाह वारसी रह० की ख़िदमत में रहकर वारसी मसलक और अपने परदादा हज़रत फैंजू शाह वारसी के वाक़ियात और ख़ास ख़िदमात के विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की तथा अपने दादा हज़रत शाहिद अली शाह वारसी के दिन चर्या कार्यों से वाक़िफ़ हैं।

इन्होंने वाक़ियाते फैंजू शाह नामक पुस्तक लिख कर मसलके वारसी से अक़ीदत रखने वालों के लिए ऐसा तोहफ़ा तैयार किया जिसका जवाब फ़िलहाल तो नहीं है।

हज़रत फैंजू और हज़रत शाहिद अली शाह वारसी से अक़ीदत व मुहब्बत रखने वालों के लिए सच्चे और सीधे रास्ते व मसलके वारसी तथा वास्तविक फ़क़ीरी को जानने व पहिचानने के लिए यह किताब हम सब वारसियों का मार्ग दर्शन करेगी।

वैसे तो मसलके वारसी की पुस्तकों में हज़रत फैंजू शाह वारसी ख़ादिमे ख़ास का नाम पढ़ने को मिलता है। मगर इतनी सूक्ष्म व गहराइयों की बातें इस किताब में पहले किसी किताब में लिखी न देखी।

मैं अपनी क्या कहूँ मेरे परिवार के तथा मेरी अन्सारी बिरादरी के अगण्य सदस्य हज़रते शाहिद अली शाह व उनके बड़े पुत्र जनाब मो० अमीन शाह वारसी के हाथों सिलसिले वारसी में दाख़िल (मुरीद) हैं।

लेखक ख़लील वारसी ने वाक़ियाते फैंजू शाह नामक पुस्तक लिख कर जो सभी जाति एवं धर्म के लोगों को हज़रत शाहिद अली शाह वारसी के कथनी एवं करनी के माध्यम से शिक्षा दी है। हम सभी उनके कृतहन हैं सत्यता तो यह है कि यदि हम सब इस पुस्तक के वाक्यों को बग़ौर पढ़ लें और अनुसरण कर लें तो हम सबका जीवन सफल है तथा उस परम पिता परमात्मा के बताये रास्ते को प्राप्त कर पापों से दूर रह सकते हैं।

निवेदक—

अब्दुल मुईद अन्सारी

बी.ए., मुअल्लिमे उर्दू, उर्दू अध्यापक

बिलग्राम, ज़िला-हरदोई

दर्पण

मैंने पढ़ा है कि सरकार आलम पनाह (वारिसे पाक) के जाँनिसारों में हज़रत फ़ैजू शाह वारसी ख़ादिमे ख़ास का स्थान सर्वोच्च है तथा हज़रत शाहिद अली शाह वारसी की मासूमियत भरी फ़क़ीरी और उनका अनोखा रंग मैंने अपने पूर्वजों व देवा के निवासियों से सुना है। परन्तु इन दोनों बुजुर्गों के बारे में जो सूक्ष्म बातें मुझे इस पुस्तक में पढ़ने को मिली वो बातें किसी पुस्तक में इन दोनों बुजुर्गों के बारे में लिखी न मिली।

वास्तव में वाक़ियाते फ़ैजू शाह नामक पुस्तक वारसी मसलक व फकीरी का वास्तविक दर्पण है। फ़ुक़राये वारसियों को चाहिए कि वो इस पुस्तक को पढ़कर इसका घोर अध्यन करें और अपना जीवन सफल बनायें तथा वारसियों को भी इस पुस्तक से शिक्षा लेनी चाहिए। ये ऐसी पुस्तक है कि जिसे हर धर्म के लोग पढ़ कर शिक्षा लेकर अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं।

जाबिर हुसैन

एम.काम., एल.एल.बी., (एडवोकेट),

बिलग्राम

परिचय

अपने विषय में

मेरा जन्म 5 जुलाई सन् 1960 ई0 में मुहल्ला माही बाग शाहाबाद जिला हरदोई में हुआ। सन् 1962 ई0 में पिताजा का स्थानान्तरण तहसील बिलग्राम जिला हरदोई हो गया। मैंने बिलग्राम में ही कक्षा 9 उत्तीर्ण किया सन् 1972 ई0 में मैं दादी की मृत्यु के बाद अपने दादा जान हज़रत शाहिद अली शाह वारसी की सेवा में देवा शरीफ आ गया। मेरी शिक्षा दीक्षा देवा शरीफ में आरम्भ हुई। शिक्षा प्राप्त करने के साथ ही साथ मैं अपने दादा जान की सेवा करने लगा। सन् 1974 ई0 में मेरी मुलाकात मास्टर महफूज़ अहमद से हुई मित्रता बढ़ती गई और मैंने उनकी सहायता से इण्टर की परीक्षा के साथ ही साथ अदीब कामिल और मुन्शी की परीक्षाएं उत्तीर्ण की सन् 1975 से सन् 1979 ई0 तक मैंने श्री डाक्टर हसन अली बी.यू.एम. एस. के दवाखाने में कम्पाउन्डर के स्थान पर कार्य किया। डाक्टर साहब हिकमत भी बड़ी अच्छी जानते थे। मैंने उनसे भिन्न-भिन्न रोगों की जानकारी ली तथा उनसे इलाज का उपाय सीखा। इसी बीच हमको कवि बनकर कविता कहने का शौक बढ़ा मैंने शेर लिखना आरम्भ किया और अपने शेरों की इसलाह हज़रत मौलाना इसरार वारसी से ली। मौलाना ने हमारा तख़ल्लुस जाम वारसी रखा और इसलाह के साथ ही साथ हमारी बड़ी हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई और दम कदम हमारी हर तरह से मदद् फरमाई। हमें कई जलसों और मुशाएरों में अपने साथ ले गये और हमको कलाम पढ़ने का मौका दिलाया। जनाब समी सिद्दीकी, जनाम मुइज़ उस्मानी, जनाब वसी मातवी, जनाब सहेर बाराबंकवी, ये शुअरा कराम भी हज़रत मौलाना इसरार अहमद साहब से इसलाह लेते थे। हज़रत मौलाना के साथ मुशाएरों में शिरकत करते थे।

जनाब मास्टर महफूज़ अहमद साहब ने मार्च 1982 ई0 में मेरा रुझान टीचरी की तरफ कराया। मेरा शौक भी बढ़ा मैंने 7 मार्च 1982 में ही मदरसा का दरिया गुलशने वारिस में एक प्रार्थना पत्र दिया मरहूम ताहिर अली कादरी ने उस प्रार्थना पत्र को स्वीकार करके मुझे अपने मदरसे में 1-7-1982 ई0 मदरसे में मोलवी की जगह दे दी। मैंने 30-6-83 तक मदरसे में मोलवी का कार्य किया। सन् 1983 में ही मेरा ध्यान मान्टेसरी स्कूल की तरफ गया मैंने जनता जूनियर हाई स्कूल के प्रबन्धक श्री शफ़ीक अहमद साहब वारसी को एक प्रार्थना पत्र दिया महानुभाव प्रबन्धक श्री शफ़ीक अहमद साहब वारसी ने प्रार्थना पत्र को स्वीकार करके मुझे

अपने विद्यालय में अध्यापक की जगह दे दी। मैंने 31 अगस्त 1988 तक कार्य किया। पहली सितम्बर 1988 को स्कूल से त्यागपत्र देकर बिलग्राम आ गया और यहाँ क़िबला वालिद साहब की कोशिश से मैंने लगभग 6 वर्ष तहसील बिलग्राम में संग्रह अमीन के पद पर कार्य किया। इसके पश्चात 9 दिसम्बर 1994 से मैं प्राइमरी स्कूल में उर्दू टीचर के स्थान पर कार्य कर रहा हूँ।

वैसे सरकार आलम पनाह के ख़ादिम ख़ास हज़रत हाजी फ़ैजू शाह वारसी का नामे नामी और उनका ज़िक्र लगभग हर वारसी मसलक की किताबों में किया गया है मगर वह अत्यधिक कम हैं। मैंने इस बात की आवश्यकता समझी कि हज़रत हाजी फ़ैजू शाह वारसी के कछ वाक़ियात लिखे जायें वहीं पर उनके भतीजे हज़रत शाहिद अलीशाह वारसी रह0 का नाम नामी भी मसलके वारसी और फ़ुक़राये वारसी में एक अहेम मरतबा रखता है क्योंकि हज़रत शाहिद अली शाह वारसी ने हज़रत फ़ैजू शाह वारसी के विसाल के बाद ख़ादिम ए ख़ास के फ़राएज़ आस्तानाए वारिस पाक पर अन्जाम दिये और अपनी पूरी ज़िन्दगी आस्ताना आलिया पर ही रहकर ख़िदमते वारिस में गुज़ारी इसलिए वाक़ियाते फ़ैजू शाह के साथ ही साथ हज़रत शाहिद अली शाह वारसी के भी हालात ए ज़िन्दगी लिखे गये हैं।

अलहक़ीर

ख़लील वारिस वारसी

31 जनवरी 2004

10

मनक़बत सरकार वारिस पाक आलम नवाज़

(1)

मुकम्मल मेरा ईमानो यक़ीं है।
दरे वारिस है और मेरी जबीं है।
बहुत हैं माहरू आलम में लेकिन।
बयाँ तरीफ हो किस किस अदा की।
दयारे हज़रते वारिस में हरदम।
ख़जिल ज़रों से हैं नज्मों करम भी।
निगाहें लुत्फ हो जाये खुदारा।
तेरा दर रश्के फिरदौसे बरीं है।
अदाये बन्दगी कितनी हँसी है।
कोई तुम सा ज़माने में नहीं है।
तुम्हारी हर अदा तो दिल नशीं है।
नुजूले नूरे रब्बुल आलमीं है।
दयारे यार की ऐसी ज़मीं है।
तलबगारे करम जामें हज़ी हैं।

(2)

जिसने शहे वारिस को पीर अपना बनाया है।
वह बज़्में तरीक़त में यकता नज़र आया है।
बिगड़ी हुई तकदीरें बन जाती हैं इस दर से।
अल्लाह ने दुनिया को अकसर ये दिखाया है।
लिल्लाह नज़र मुझपर हो लुत्फो इनायत की।
सरकार बहुत हम को गरदिश ने सताया है।
जिसपर मेरे मौला ने इक चश्मे करम डाली।
अल्लाह की हरमत का उस शख़्स पे साया है।
शाहाने जहाँ को क्या मिल पायेगा शाही में।
वारिस के गदाओं ने जो लुत्फ उठाया है।
इक साँस भी मत ख़ाली हो यादे इलाही से।
ये हज़रते वारिस ने हम सबको सिखाया है।
रौज़े पे हुजूरी भी तौफ़ीक़ से होती है।
जब इज़्न मिला जिसको वो दौड़ के आया है।
कह देता कोई मुझसे ऐ जाम कि जा तुझको।
हसनैन के नाना ने तैबा में बुलाया है।